पाषाण युग में कृषि का आरम्भ एवं अर्थव्यवस्था का विकास

Naveen

Research Scholar, Dept. of History, MDU Rohtak

सार

भारतीय संस्कृति एवं शासन का क्रमवद्ध इतिहास नहीं मिलता है। फिर भी ऐसे साधन उपलब्ध हैं जिनके अध्ययन एवं सर्वेक्षण से हमें भारत की प्राचीनता की कहानी की जानकारी होती है। इन साधनों के अध्ययन के बिना अतीत और वर्तमान भारत के निकट के संबंध की जानकारी करना भी असंभव है।

परिचय

प्राचीन भारत के इतिहास की जानकारी के साधनों को दो भागों में बाँटा जा सकता है- साहित्यिक साधन और पुरातात्विक साधन, जो देशी और विदेशी दोनों हैं। साहित्यिक साधन दो प्रकार के हैं- धार्मिक साहित्य और लौकिक साहित्य। धार्मिक साहित्य भी दो प्रकार के हैं - ब्राह्मण ग्रन्थ और अब्राह्मण ग्रन्थ। ब्राह्मण ग्रन्थ दो प्रकार के हैं - श्रुति जिसमें वेद, ब्राह्मण, उपनिषद इत्यादि आते हैं और स्मृति जिसके अन्तर्गत रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतियाँ आदि आती हैं। लौकिक साहित्य भी चार प्रकार के हैं - ऐतिहासिक साहित्य, विदेशी विवरण, जीवनी और कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य। पुरातात्विक सामग्रियों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है - अभिलेख, मुद्राएं तथा भग्नावशेष स्मारक।

पाषाण युग

इतिहास का वह काल है जब मानव का जीवन पत्थरों (संस्कृत - पाषाणः) पर अत्यधिक आश्रित था। उदाहरनार्थ पत्थरों से शिकार करना, पत्थरों की गुफाओं में शरण लेना, पत्थरों से आग पैदा करना इत्यादि। इसके तीन चरण माने जाते हैं, पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल एवं नवपाषाण काल :

पुरापाषाण काल

हिमयुग का अधिकांश भाग पुरापाषाण काल में बीता है। भारतीय पुरापाषाण युग को औजारों, जलवायु परिवर्तनों के आधार पर तीन भागों में बांटा जाता है -

- आरंभिक या निम्न पुरापाषाण युग (25,00,000 ईस्वी पूर्व - 100,000 ई. पू.)
- मध्य पुरापाषाण युग (1,00,000 ई. पू. - 40,000 ई. पू.)

- उच्च पुरापाषाण युग (40,000 ई.पू -10,000 ई.पू.)

आदिम मानव के जीवाश्म भारत में नहीं मिले हैं। महाराष्ट्र के बोरी नामक स्थान पर मिले तथ्यों से अन्देशा होता है कि मानव की उत्पत्ति 14 लाख वर्ष पूर्व हुई होगी। हँलांकि यह बात लगभग सर्वमान्य है कि अफ़्रीका की अपेक्षा भारत में मानव बाद में बसे। यद्दपि यहां के लोगों का पाषाण कौशल लगभग उसी तरह विकसित हुआ जिस तरह अफ़्रीका में। इस समय का मानव अपना भोजन कठिनाई से ही बटोर पाता था। वह ना तो खेती करना जानता था और ना ही घर बनाना। यह अवस्था 9000 ई.पू. तक रही होगी।

पुरापाषाण काल के औजार छोटानागपुर के पठार में मिले हैं जो 1,00,000 ई.पू. तक हो सकते हैं। आंध्र प्रदेश के कुर्नूल जिले में 20,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. के मध्य के औजार मिले हैं। इनके साथ हड्डी के उपकरण और पशुओं के अवशेष भी मिले हैं। उत्तर प्रदेश के मिर्ज़ापुर जिले की बेलन घाटी में जो पशुओं के अवशेष मिले हैं उनसे ज्ञात होता है कि बकरी, भेड़, गाय, भैंस इत्यादि पाले जाते थे। फिर भी पुरापाषाण युग की आदिम अवस्था का मानव शिकार और खाद्य संग्रह पर जीता था। पुराणों में केवल फल और कन्द मूल खाकर जीने वालों का जिक्र है। इस तरह के कुछ लोग तो आधुनिक काल तक पर्वतों और गुफाओं में रहते आए हैं।

प्रौगएतिहासिक युग का वह समय है जब मानव ने पत्थर के औजार बनाना सबसे पहले आरम्भ किया। यह काल आधुनिक काल से २५-२० लाख साल पूर्व से लेकर १२,००० साल पूर्व तक माना जाता है। इस दौरान मानव इतिहास का ९९% विकास हुआ। इस काल के बाद मध्यपाषाण युग का प्रारंभ हुआ जब मानव ने खेती करना शुरु किया था।

भारत में पुरापाषाण काल के अवशेष तमिल नाडु के कुरनूल, कर्नाटक के हूँस्न्गी, ओडिशा के कुलिआना, राजस्थान के डीडवानाके श्रृंगी तालाब के निकट और मध्य प्रदेश के भीमबेटका में मिलते हैं। इन अवशेषो की संख्या मध्यपाषाण काल के प्राप्त अवशेषो से बहुत कम है।
मानव इतिहास के आरम्भ (२५ लाख साल पूर्व) से लेकर काँस्य युग तक फ़ैला हुआ है।

नवपाषाण युग

नव पाषाण काल अथवा 'उत्तर पाषाण काल' की साधारणत: काल सीमा 3500 ई. पू. से 1000 ई. पू. के बीच मानी जाती है। यूनानी भाषा का 'निओ' (Neo) शब्द नवीन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। इसलिए इस काल को ‘नवपाषाण काल‘ कहा जाता है।
मुख्य स्थल
इस काल की सभ्यता भारत के विशाल क्षेत्र में फैली हुई थी। सर्वप्रथम 1860 ई. में 'ली मेसुरियर' (Le Mesurier) ने इस काल का प्रथम प्रस्तर उपकरण उत्तर प्रदेश की टौंस नदी की घाटी से प्राप्त किया। इसके बाद 1872 ई. में 'निबलियन फ़्रेज़र' ने कर्नाटक के बेलारी क्षेत्र को दक्षिण भारत के उत्तर पाषाण कालीन सभ्यता का मुख्य स्थल घोषित किया। इसके अतिरिक्त इस सभ्यता के मुख्य केन्द्र बिन्दु थे- कश्मीर, सिंध प्रदेश, बिहार, झारखंड, बंगाल, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम आदि।

भीमबेटका स्थित पाषाण कालीन शैल चित्र

मानव द्वारा कृषि का प्रारम्भ

इस समय प्राप्त प्रस्तर औज़ार गहरे ट्रेप (Dark Traprock) के बने थे, जिन पर एक विशेष प्रकार की पॉलिश लगी होती थी। नव पाषाण काल में चावल की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य इलाहाबाद के नज़दीक 'कोल्डिहवा' नामक स्थान से मिलता है, जिसका समय 7000-6000 ई. पू. माना जाता है। धान के अतिरिक्त महगड़ा में भी खेती का साक्ष्य मिलता है। महगड़ा में एक पशुवाड़ा भी मिला है। इस समय तक पाषाणकालीन सभ्यता काफ़ी विकसित हो गयी थी। अब मनुष्य आखेटक, पशुपालक से आगे निकल कर खाद्य पदार्थों का उत्पादक एवं उपभोक्ता भी बन गया था। अब वह ख़ानाबदोश वाले जीवन को त्याग कर स्थायित्वपूर्ण जीवन की ओर आकर्षित होने लगा था। उसे बर्तन बनाने की तकनीक का भी ज्ञान हो गया था। सम्भवतः वस्त्रों की जगह जानवरों की खालों का प्रयोग करते थे। नव पाषाण काल की प्राप्त कुछ पर्वत कन्दराओं और बर्तनों से चित्रकारी का आभास होता है।

कृषि कर्म का प्रारम्भ तो नव पाषाण काल में अवश्य हुआ, पर सर्वप्रथम किस स्थान पर कृषि कर्म प्रारम्भ हुआ, यह विवाद का विषय है। 1977 से चल रही खुदाई में अब तक प्राप्त साक्ष्यों से ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सिंध और बलूचिस्तान की सीमा पर स्थित 'कच्छी मैदान' में बोलन नदी के किनारे मेहरगढ़ नामक स्थान पर कृषि कर्म का प्रारम्भ हुआ। इस सभ्यता के लोगों ने अग्नि का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया था। कुम्भकारी सर्वप्रथम इसी काल में दृष्टिगोचर होती है। नव पाषाणकालीन महत्त्वपूर्ण स्थल हैं-

नव पाषाण काल की महत्त्वपूर्ण विशेषता पॉलिशदार कुल्हाड़ी है। इस काल का नाम सर्वप्रथम जॉन ल्यूवाक ने अपनी पत्रिका 'न्यू हिस्टोरिका' में दिया। भारत में नव पाषाण काल के उपकरण की खोज 1860 ई. में मन्सूरर द्वारा की गई, उन्होंने उत्तर प्रदेश के टोन्स घाटी में उत्खनन कार्य किया। इस युग से प्राचीन कृषक समुदायों का बसना प्रारम्भ हुआ। ई. काल में प्राचीनतम फ़सल के साक्ष्य नील नदी की घाटी में मिले हैं। प्राचीनतम फ़सल गेहूँ को माना जाता है, चावल को नहीं। 7000 बी.सी. के आसपास भारतीय उपमहाद्वीप में गेहूँ के साक्ष्य बलूचिस्तान के मेहरगढ़ में मिले है। 6000 बी.सी. में विश्व में प्राचीनतम चावल के साक्ष्य बेलन घाटी में कोल्डीहवा, इलाहाबाद में मिले हैं। दक्षिण भारत में बाजरे एवं रागी के साक्ष्य मिले हैं। विश्व में प्राचीनतम कपास के साक्ष्य 7000 बी.सी. के आस.पास मेहरगढ़ में मिले हैं। इस समय के मानव ने समय के महत्व को समझते हुए कृषि की तकनीकी को विकसित कर लिया, जिससे उत्पादन बढ़ा।

अर्थव्यवस्था का प्रारम्भ

इस युग से बचत की अर्थव्यवस्था का प्रारम्भ हुआ। संभवतः अन्न के लिए लोगों के मध्य युद्ध हुआ। इस पूरे काल मे अर्थव्यवस्था के कारण युद्ध जैसी स्थिति अक्सर बनी रहती थी। इसी कारण प्रारंभिक समाज और राजनीति के प्रथम चरण दिखने लगे। युद्ध के कारण इस काल में छोटे-छोटे समूह में नेतृत्वकर्ता या नेता का उदय हुआ। भविष्य में यही मुखिया या राजा बना। युद्ध के कारण युद्ध कला और उससे सम्बन्धित लोगों का समूह बनने लगा, लेकिन इस समय के समाज को कार्य के आधार पर विभाजित नहीं मान सकते हैं। समाज विभाजन महिला और पुरुष में हुआ। इस समय युद्ध के कारण मुद्रा सील्स का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। यह मुद्राएं वास्तव मे स्वामित्व को बताती थीं। युद्ध के कारण समूहों में आपसी एकता के लिए जाति देवता जैसी अवधारणा विकसित हुई। ग्रामीण समाज में 'टोटम' कुल जाति चिन्ह का प्रयोग हुआ। पशुपालन के कारण मानव पशुओं के करीब आया। माना जाता है कि जीव विज्ञान का प्रयोग शुरू हुआ। खाद्यान्न को रखने के लिए बडे-बड़े बर्तनों का प्रयोग हुआ। माना जाता है कि रसायन विज्ञान का प्रयोग शुरू हुआ। अर्थव्यवस्था में वर्षा का महत्त्व बढ़ा, जिससे ज्योतिषशास्त्र का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इस काल में मानव ने सुई धागे का प्रयोग प्रारम्भ किया। पहिए का आविष्कार हुआ, परन्तु इसका प्रयोग यातायात में नहीं, बर्तन बनाने में हुआ, जैसे कुम्हार का चाक आदि। इस काल में मानव ने नाव जैसी चीज का निर्माण किया, परन्तु यातायात में प्रयोग नही किया। मानव की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा और मकान की पूर्ति हुई।

ताम्र पाषाण युग

नवपाषाण युग का अन्त होते होते धातुओं का प्रयोग शुरू हो गया था। ताम्र पाषाणिक युग में तांबा तथा प्रस्तर के हथियार ही प्रयुक्त होते थे। इस समय तक लोहा या कांसे का प्रयोग आरम्भ नहीं हुआ था। भारत में ताम्र पाषाण युग की बस्तियां दक्षिण पूर्वीराजस्थान, पश्चिमी मध्य प्रदेश, पश्चिमी महाराष्ट्र तथा दक्षिण पूर्वी भारत में पाई गई है।

पत्थर और तांबे के उपकरणों का साथ- साथ प्रयोग के कारण ताम्र - पाषणिक संस्कृति कहलाई, ये न तोशहरी हैं न हडप्पा काल की। मानव के उपयोग में आने वाली सबसे पहली धातु तांबा है, इस युग के लोगअधिकांशतः पत्थर और तांबे की वस्तुओं का प्रयोग करते थें।

ISSN: 2319-7471, Vol. 4 Issue 8, August-2015

निष्कर्ष

मानव जीविका और जीवन शैली में एक महत्वपूर्ण और सुदूरगामी परिवर्तन उन क्षेत्रों में खेती करना था जहां सबसे पहले फसलों की खेतीबारी शुरू की गई: अनिवार्य रूप से खानाबदोश शिकारी समूह की जीविका तकनीक या देहाती पारमानवता पर पूर्व निर्भरता को सबसे पहले पूरा किया गया और उसके बाद उत्तरोत्तर उसकी जगह खेतों से उत्पन्न खाद्य पदार्थों पर निर्भरता ने ले लिय. ऐसी भी मान्यता है कि इन घटनाक्रमों पर बस्तियों के विकास का काफी प्रभाव पड़ा था क्योंकि ऐसा माना जा सकता है कि कहतों को तैयार करने के लिए अधिक समय और मेहनत खर्च करने की बढ़ती जरूरत के लिए अधिक स्थानीयकृत आवास की आवश्यकता थी।

सन्दर्भ

1. हमारे अतीत १. कक्षा ६ की पाठ्य पुस्तक. NCERT. २००९.
2. पाषाणकाल से सम्बंधित कुछ तथ्य (हिन्दी) आईसीएसलखनऊ.इन। अभिगमन तिथि: 21 नवम्बर, 2014।
3. "दी वर्ल्ड्स फस्ट टेम्पल", पुरातत्व पत्रिका, नवम्बर/दिसम्बर 2008 पी. 23.
4. फुलर, डोरियन 2006. "दक्षिण एशिया में कृषि मूल और फ्रंटियर्स: कार्य संश्लेषण" जर्नल ऑफ वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री 20 में, पी.42, "गंगेज निओलिथिक"